Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शोषण, संघर्ष और वंचित वर्ग : संजीव की कहानियों के संदर्भ में

नरेश कँवर भाटी* प्रो. मलय पानेरी**

*शोधार्थी, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** प्राचार्य, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड- टू-बी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – भारतीय समाज का जो वर्तमान स्वरूप है उसका विकास किसी निश्चित तिथि, दिन अथवा वर्ष में नही हुआ है अपितु समय के साथ-साथ उसका विकास हुआ है। वर्तमान समाज में जाति, वर्ण, धर्म तथा गरीबी अथवा अमीरी के आधार पर विविध वर्ग बनाये गये है। इनमें सबसे निचले हाशिये पर वंचित वर्ग है।

वंचित वर्ग समाज का वह हिस्सा है जो विभिन्न कारणों जैसे गरीबी, भेदभाव, या अवसरों की कमी के कारण, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से मुख्यधारा से अलग-थलग पड़ जाता है। इन वर्गों को अक्सर सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक रूप से पिछड़े हुए लोगों के रूप में देखा जाता है, जिन्हें समाज में समान अवसर और संसाधन प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

संजीव की रचनाधर्मिता सदैव नए विषयों की खोज रही है, नई वैचारिक अभिव्यक्ति, संवेदना और सांस्कृतिक विघटन से टूट रहे समाज की पीड़ा इनकी कहानियों के केंद्र में निहित है। संजीव की कहानियाँ वंचित समाज के अंदर चेतना का संचार करने में सक्षम हैं।

संजीव जी की सदैव अपनी आवाज नारी, किसान, भिखारी, गरीब, आदिवासी, दलित एवं शोषित के पक्ष में उठते रहे है। उन्होने पिछडे एवं वंचित वर्ग की समस्याओं को समझकर ही उनके यथार्थ को बड़ी बारीकी एवं संवेदनशीलता के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है।

संजीव जी की कहानियों में पीड़ित, शोषित एवं वंचित वर्ग का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है जिसके अन्तर्गत श्रमिक, किसान, मजदूर एवं नीचले तबके के लोग आते है। जिनकी समाज में स्थिति उनकी कम आय एवं शैक्षिक स्थिति पर निर्भर करती है। इस शोधपत्र का उद्देश्य संजीव की कहानियों में वंचित वर्ग के शोषण और संघर्ष के कारकों की पहचान कर उनकी स्थिति का आंकलन करना है।

शब्द कुंजी – वंचित वर्ग, किसान, भिखारी, गरीब, आदिवासी, दलित, शोषण और संघर्ष, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति, संजीव जी, वैचारिक अभिव्यक्ति, संवेदना और सांस्कृतिक विघटन।

प्रस्तावना – वंचित वर्ग जनसंख्या के उन समूह को कहा जाता है जिन्हें विभिन्न प्रणालीगत कारकों के कारण सफलता या संसाधनों, सेवाओं और अवसरों तक पहुँच में अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। ये बाधाएँ आर्थिक, सामाजिक या संरचनात्मक असमानताओं, जैसे गरीबी, भेदभाव, शिक्षा का अभाव, या सामाजिक बहिष्कार, से उत्पन्न हो सकती हैं।

सामाजिक रूप से वंचित समूह से तात्पर्य विशिष्ट सामाजिक समूहों से है, जैसे कि अल्प प्रतिनिधित्व वाले अल्पसंख्यक, बुजुर्ग, बेघर और विकलांग व्यक्ति, जो भेदभाव, संसाधनों की कमी या अवसरों तक सीमित पहुँच जैसे विभिन्न कारकों के कारण समाज में चुनौतियों और बाधाओं का सामना करते हैं। ऐसे लोग जाति, धर्म, लिंग या अन्य सामाजिक कारकों के कारण भेदभाव का सामना करते हैं और समाज में हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं।

आर्थिक रूप से वंचित वर्ग वे लोग हैं जो गरीबी, बेरोजगारी, या अपर्याप्त आय के कारण बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन, आवास और स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित हैं। इसी प्रकार शैक्षिक रूप से वंचित वर्ग वे लोग हैं जो शिक्षा, कौशल विकास और ज्ञान तक पहुँचने में असमर्थ हैं, जिससे उनके सामाजिक और आर्थिक विकास में बाधा आती है।

वंचित वर्ग के लोगों को जाति, धर्म या लिंग के आधार पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इन लोगों को राजनीतिक प्रक्रिया में समान भागीदारी का अवसर नहीं मिलता है, जिससे उनके अधिकारों की रक्षा करना मुश्किल हो जाता है।

संजीव जी की कहानियों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उन्होंने आम आदमी की संवेदनाओं को अत्यन्त मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने पिछड़े, उपेक्षित एवं हाशिए पर स्थित आदमी को अपनी कहानियों में चित्रित कर हिन्दी साहित्य को आगे बढ़ाने का सफल प्रयास किया है।

संजीव जी ने नारी, किसान, भिखारी, गरीब, आदिवासी, दलित एवं शोषित को वंचित वर्ग माना है और अपनी कहानियों में प्रमुखता का स्थान दिया है।

संजीव की कहानियों में वंचित वर्ग कृ शोषण एवं संघर्ष – वंचित वर्ग प्राय: सामाजिक रूप से बहिष्कार का सामना करते हैं, जिससे उन्हें समाज में सम्मान और स्वीकृति नहीं मिल पाती है। वंचित वर्ग के लोगों को गरीबी और आर्थिक अवसरों की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनको अपना जीवनयापन करने में कठिनाई महसूस होती है। साथ ही इस वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिससे उनके भविष्य के विकास में रूकावट आती है।

संजीव जी ने अपनी कहानियों में वंचित वर्ग को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक रूप से होने वाले शोषण एवं इस वर्ग के लोगों द्वारा किये जाने वाले संघर्षों का सटीक चित्रण किया है।

अन्धे शिखर नामक कहानी में संजीव जी ने अफसरों के द्वारा मजदूरों के शोषण, उनकी अनेतिकता तथा गरीबी के कारण बेटी को अफसरों को सौंप देने की विवशता आदि का चित्रण किया है।

इस प्रकार पूंजीवादी व्यवस्था के द्वारा संघर्ष एवं शोषण की मनोदशा को अभिव्यक्त किया गया है।

सावधान! नीचे आग है नामक उपन्यास में संजीव जी ने चन्द्रपुर गांव के कोयला खदान में कार्य करने वाले मजदूर, आदिवासी जीवन का संघर्ष और शोषण का अंकन किया है। संजीव जी ने इस उपन्यास में कोयला खदान के मजदूरों की दीन-दशा को प्रस्तुत किया है।

संजीव का उपन्यास 'फांस' के केन्द्र में हैं विदेशों और समूचे देश में तीन लाख से ज्यादा हो चुकी किसानों की आत्महत्याएँ और 80 लाख से ज्यादा किसानी छोड़ चुके भारतीय किसान। स्वयं को या खास कर शेतीयोग्य और छोटी सी कार्यात्मक और जीवनीशक्ति पर बात की जाए तो, तमाम विपरीत परिस्थितियों के बीच शंकुन और छोटी जिस तरह समय की विफल उम्मीद और बदलाव का संघर्ष जारी रखती है। यह उपन्यास समर्पित है सबका पेट भरने और तन ढकने वाले देश के लाखों किसानों और उनके परिवारों को जिनकी हत्या या आत्महत्या को हम रोक नहीं पा रहे हैं।

संजीव जी ने अपनी कहानी लाँग साइट में मालिक एवं मजदूर के बीच के संघर्ष को दर्शाया है जिसमें कारी में 'स' नामक हथियार की चोरी छुपने के कारण परिवार की होने वाले अपमान ग्रस्त जीवन का सटीक चित्रण किया गया है।

सती प्रथा को केन्द्र में रख कर लिखे गये संजीव जी के उपन्यास 'भंवर पहचानो' समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक पाखण्ड की परतें उधेड़ता है। 'अव्वल तो राजकुमारियाँ जन्म ही नहीं ले पाती, जन्म ले भी लिया तो जी नहीं पाती और जो जी भी गयी, जैसे अभी लाल साहब की एक है, तो उसे काफी पर्दे में रखा जाता है।'

प्रेत मुक्ति कहानी में संजीव जी ने निम्नवर्ग के लोगों का जीविकोपार्जन के लिए जमींदार के पास, कारखानों में एवं काली खदानों में कार्य करते हुए दर्शाया गया है एवं इसके परिणामस्वरूप वंचित वर्ग के लोगों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है।

सागर सीमांत नामक कहानी में संजीव जी ने निम्नवर्ग के मछुआरों की असुरक्षित जिन्दगी एवं खतरों का विस्तृत रूप से वर्णन किया है। जिसमें दर्शाया गया है कि किस प्रकार अपनी आजीविका के लिए मछलियों का शिकार के लिए निकले करणी एवं उसके मछुआरों दोस्तों को तूफान में फंसने के कारण अपनी जिन्दगी हाथ धोना पड़ा था।

संजीव जी ने चाकरी नामक कहानी में बेकारी की समस्या को उठाते हुए दर्शाया है कि किस प्रकार गरीबी एवं नौकरी के अभाव में सब लोगों से बहिष्कृत व्यक्ति अपने ही बच्चों-पहाडू होने का अपमान दर्दी का सामना करता है। इसी प्रकार बेकारीकृबाबत कहानी में संजीव जी ने बेरोजगारी से जूझते वंचित वर्ग के व्यक्ति की मानसिकता को उजागर किया है।

जसी बहू कहानी में संजीव जी ने आज के समाज में वंचित वर्ग की नारी को वासना दृष्टि का साधन मानते हुए उन पर होने वाले बलात्कारों की संख्या में होने वाली वृद्धि का मार्मिक चित्रण किया है।

घर चलो दुलारी बाई कहानी में दर्शाया गया है कि विधवा दुलारीबाई को अपने ही जेठ की वासना का शिकार होना पड़ता है। संजीव जी लिखते हैं कि वैश्यावृत्ति में महिलाओं की स्थिति शुरू की तरह ही थी।

त्रिवेणी का तड़पना नामक कहानी में संजीव जी ने दर्शाया है कि किस प्रकार दलितों को आर्थिक समस्या के कारण समाज में अपमानित एवं उपेक्षित जिन्दगी जीते हुए अपने दैनिक कार्यों को करना पड़ता है। तिरछेनी और उसकी पत्नी पूँजीपतियों के डर से तड़का मचो छोड़ने का, फैसला करते हैं। पढ़ने पर तिरछेनी बहू, कहती है कि किस आधार पर यहां रहा जाए, यहां हर कोई हमें दबाने को तैयार रहता है।

गोलक कहानी में संजीव जी ने दर्शाया है कि किस प्रकार पूँजीपति वर्ग अपने कारखाने में मजदूरी करने वाले वंचित वर्ग के लोगों का आर्थिक शोषण के साथ-साथ मानसिक एवं शारीरिक शोषण भी करते है तथा अपने विरोध खड़े होने वाले लोगों के विरुद्ध अपने धन बल का प्रयोग कर उनकी आवाज को दबा देते हैं।

कन्फेशननामक कहानी के द्वारा संजीव जी ने दर्शाया है कि सामाजिक स्थिति से सदैव जीविकोपार्जन करने वंचित वर्ग के आदमी को आर्थिक, शारीरिक व पारिवार का शोषण कर उसकी जिन्दगी को बर्बाद देते हैं। इसका मानना है कि मजदूरों को यह नियति है कि वे केवल गुलाम की तरह परिश्रम करता रहे।

मरोड़ नामक कहानी में संजीव जी ने दर्शाया है कि पूँजीपति चंदनिया अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए मास्टर दीनानाथ का पूरा समय ही खरीद लेते है। एवं दीनानाथ पुत्र स्वयं अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए समय ही नहीं मिलता। जो वंचित वर्ग का शोषण का एक नया रूप है।

संजीव जी ने वंचित वर्ग के शोषण का एक प्रमुख कारक धर्म को भी माना गया है। जिसमें सखरे धर्म के ठेकेदार वंचित वर्ग का खून चूस रहे हैं। शोषित लोग गरीबी में जीते-मरते दिखाई देते है। धर्म की आड़ में शोषक वंचित समुदाय की नारियों का भी शोषण करते है।

राख नामक कहानी में संजीव जी ने वंचित वर्ग के शोषण के एक रूप में अंधविश्वास का उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिसमें अंधविश्वास एवं शगुन-अपशगुन के चलते जोखू बहू के आँखों होने के कारण परिवार एवं गांव वाले उसे अशुभ मानते है। लोगों का मानना है कि उसके कारण उनकी खेती बर्बाद हो जायेगी। इसलिए गांव से छुआछूत के कारण जोखू एवं उसकी बहू को कोई काम ही नहीं देता जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और बदतर हो जाती है।

प्याज के छिलका नामक कहानी के माध्यम से संजीव जी ने दर्शाया है कि दलित वर्ग के लोगों को छूना सवर्ण लोग पाप मानते हैं। यह ऊँच-नीच तथा धार्मिक अंधश्रद्धा का परिणाम है। इस कहानी में हरिजन कैलाशिया मुंशी जी के खेत से एक प्याज उखाड़ लेता है जिसके लिए उसके बाल को पकड़कर उसे उठाते है और इसको छूने से हाथ धोकर फिर नहाकर मंदिर जाते है ताकि इस स्पर्श के अहसास से मुक्ति मिले।

भारत में, जाति व्यवस्था एक प्रमुख कारक है जो सामाजिक और राजनीतिक असमानता को जन्म देती है। अछूत और अन्य निचली जातियों को ऐतिहासिक रूप से भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है, जिससे उनके राजनीतिक सशक्तिकरण में बाधा आई है।

संजीव जी ने अपनी कहानियों में राजनेताओं के द्वारा किये गये भ्रष्टाचारों का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। चूतिया बना रहे हो नामक कहानी में उन्होंने दर्शाया है कि जाति के आधार पर सूरजमान सिंह चुनाव जीतने का परिश्रम करते है सत्ता की प्राप्ति के लिए वे अपने विरोधी की हत्या तक करवा देने में सक्षम है। वे सत्ता को हथियाने के लिए कुछ भी कर सकते

है किन्तु अपने भाषण में सभी को अपने से श्रेष्ठ बताते रहते है।

साहित्य की समीक्षा – वंचित वर्ग पर कई उपन्यास लिखे गए हैं जो सामाजिक असमानता, गरीबी और हाशिए पर पड़े समुदायों के संघर्षों को दर्शाते हैं। कुछ प्रमुख उपन्यासकारों में फणीश्वर नाथ रेणु, मुंशी प्रेमचंद, कमलेश्वर, भीष्म साहनी एवं राजेन्द्र यादव सम्मिलित है।

मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास गोदान एक गरीब किसान, होरी के जीवन संघर्षों और ग्रामीण भारत की गरीबी और सामाजिक अन्याय को गहराई से चित्रित करता है।

फणीश्वर नाथ रेणु का उपन्यास मैला आँचल एक पिछड़े ग्रामीण क्षेत्र की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करता है, जिसमें वंचित वर्गों की दुर्दशा भी शामिल है।

कमलेश्वर लिखित 'डाक-बंगला' उपन्यास नारी जीवन की त्रासदी का यथार्थ दस्तावेज है। उपन्यास में पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसी के साथ आगामी अतीत नामक उपन्यास में लेखक ने कस्बे में वेश्याओं की जिंदगी के यथार्थ को 'चांदनी' के माध्यम से बहुत ही सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है। इस उपन्यास को 'मौसम' नाम से भी फिल्माया गया है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ और उपेक्षित वर्ग अभाव से ग्रस्त जिंदगी किस तरह बिता रहा है। इसका स्वाभाविक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

राजेन्द्र यादव द्वारा रचित उपन्यास अनदेखे अंजाने पुल में एक कुरूप स्त्री की मानसिक गतिविधियों का उल्लेख है। यह 'निम्मी' की कहानी है। भरा-पूरा बड़ा परिवार। उसके जीवन में तीन पुरुष दर्शन, बैजल व समर आते हैं। दर्शन से हुआ मोहभंग, बैजल के चचुन की घटना, तथा समर से हुआ अपमान आदि घटनाओं ने निम्मी के मन को तोड़ दिया था। अत: वह बीमार पड़ जाती है। इसी बीच दर्शन का आगमन और उसके द्वारा निम्मी को दिया गया आत्मीय चचुन उसकी मानसिकता को बदल देता है। इसके बाद निम्मी आगे पढ़ी, देश- विदेश में नाम कमाया। अंतत: वह एक सफल स्त्री बनी। राजेन्द्र यादव ने नारी मन का सफल व यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

भीष्म साहनी के उपन्यास 'बसंती' में निम्न वर्गीय समुदाय का जीवन चित्रित है। दिल्ली में आकर बसे यह कुछ ऐसे लोगों की कहानी है, जो गांव में सूखा, अकाल और भुखमरी के कारण बेहाल जिंदगी को छोड़कर शहरों में भाग आए हैं। इन्हीं में से चौधरी नोवा अपनी चौदह साल की लड़की बसंती को साठ साल के लंगड़े दर्जी बुलाकीराय को विवाह की आड़ में बेचना चाहता है, किन्तु बसंती अपने प्रेमी दीन के साथ भाग जाती है। दीन पहले से ही शादी-शुदा और धोखेबाज है। वह बसंती को मात्र तीन रुपये में अपने दोस्त बगडू को बेच देता है। यह उपन्यास स्त्री जाति के शोषण व उसकी पीड़ा का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष – इन उपन्यासों के विवेचन से हम कह सकते हैं कि संजीव जी एक ऐसे उपन्यासकार दिखाई देते हैं। जिन्होंने समाज के विविध वंचित वर्ग के जीवन को करीब से देखा है, जाना है पहचाना और फिर उसे अपने साहित्य में उजागर किया है। ग्रामीण परिवेश, आदिवासी जीवन, सरकस के मजदूर, कोयला खदान के मजदूर, सती प्रथा आदि नारी की संघर्षशीलता को अपने उपन्यासों के पात्रों में बखूबी दिखाया है। उनके उपन्यास-साहित्य में आदिवासी नारी जीवन संघर्ष की अनेक छवियाँ अंकित हैं। आदिवासी नारी संघर्ष पूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर है। इन्हें पुरुषों की भाँति आजादी से रहने के अवसर मिलने के बाद भी इन स्त्रियों का शोषण किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. टण्डन प्रताप नारायण (1956), हिन्दी उपन्यास में वर्ग भावना, लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, लखनऊ पृष्ठ 127
2. केशवदेन शर्मा, आधुनिक हिन्दी उपन्यास एवं वर्ग संघर्ष पृष्ठ 17
3. तिवारी डॉ0 रामचन्द्र, हिन्दी गद्य का साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. परमार शुभा, नारीवाद सिद्धांत और व्यवहार, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015
5. प्रसाद माता, हिन्दी काव्य में दलित काव्यधारा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1993
6. भटनागर डॉ0 अनसूति, नारी समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर।
7. श्रीवास्तव श्री जगदीश, समकालीन कविता पर एक बहस, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978
8. नागेन्द्र डॉ0, हरदयाल डॉ0, हिन्दी साहित्य का इतिहास नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण 2012
9. उबूधय, शहजादहान मणि, सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव, श्रुति पब्लिकेशन, जयपुर, संस्करण, 2009, पृ,77
10. संजीव का कथाकृसंसार, तीसरा पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण,2008, पृ सं, 268
11. तीस साल का सफरनामा,संजीव, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, 1981
12. प्रेरणाम्नोत और अन्य कहानियां, संजीव, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, 1995
13. संजीव जंगल जहाँ शुरू होता है 2000 राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. संजीव सप्रधार 2003 राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. संजीव धार 1990 राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. संजीव (2015) फांस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
17. संजीव: आप यहाँ है 1984, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली प 16
18. संजीव जी: धुनुप टंकार, 1984 अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।
19. संजीव जी: लाँग साइट, 1987 पराग प्रकाशन, दिल्ली।
20. संजीव प्रतमुक्ति, 1996 दिशा प्रकाशन, दिल्ली।
21. संजीव जी: सागर सीमांत, 1996, किताबघर, दिल्ली।
22. संजीव जी: तिरछेनी का तड़का, 1996, दिशा प्रकाशन, दिल्ली।
23. संजीव जी: गोलक, 1993, यात्री प्रकाशन, दिल्ली।
24. संजीव जी: कम्पेशन, 1997, दिशा प्रकाशन, दिल्ली।
25. संजीव जी: मरोड़, 1981 दिशा प्रकाशन, दिल्ली।
26. संजीव जी: चूतिया बना रहे हो, 1987, पराग प्रकाशन, दिल्ली।
27. संजीव जी: अन्धे शिखर, 1981 दिशा प्रकाशन, दिल्ली।
28. संजीव जी: महामारी, 1987 पराग प्रकाशन, दिल्ली।
29. संजीव जी: प्याज के छिलके, 1984 अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।
30. संजीव जी: लिटरेचर, 2000, दिशा प्रकाशन, दिल्ली।
31. संजीव जी, आकाश चम्पा (2008) सेमावध पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद।
32. संजीव जी, (2012) रह गई दिशाएँ इसी पार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

33. डॉ.रविभूषण, स्वतंत्र भारत की वास्तविक कथा: संजीव की कहानियाँ (लेख) कथाकार संजीव, प. सं. 188
34. गोपाल राय, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रथम संस्करण 2002, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
35. डॉ.विवेकी राय समकालीन हिन्दी उपन्यास, प्रथम संस्करण, 1987 राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद।
36. खरे, डॉ. वर्षा एवं वर्मा राजेश कुमार (2021) संजीव: नारी पात्रों के विशेष संदर्भ में, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, पेज 3
37. संजीव, 'किशनगढ़ का अहेरो', मीनाक्षी पुस्तक मंदिर द्वारा सन् 1981 ई. में प्रकाशित।
38. गोदान (1963) मुंशी प्रेमचंद, जयको पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, न्यू देहली।
39. मैला आँचल (1954) फणीश्वर नाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, न्यू देहली।
40. डाक-बंगला (1970) कमलेश्वर, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, देहली।
41. अनदेखे अंजाने पुल (2012) राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. दरियागंज, न्यू देहली।
42. बसंती (2008) भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दरियागंज, न्यू देहली।

****